सुविचार– अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

बंदर की चतुराई

बहुत समय पहले की बात है। एक घने और हरे-भरे जंगल के बीचों-बीच एक विशाल पेड़ खड़ा था. उस पेड़ पर गोलू नाम का एक फुर्तीला और चतुर बंदर रहता था. पेड़ पर सालभर मीठे और रसदार फल लगते थे.

गोलू सुबह से शाम तक उन फलों का आनंद लेता, डाल से डाल पर उछलता-कूदता और खुशी से अपना जीवन बिताता था. उस पेड़ के नीचे एक चौड़ी नदी बहती थी. नदी में एक बड़ा मगरमच्छ रहता था. वह कई दिनों से गोलू को देख रहा था. उसके मन में बार-बार एक ही विचार आता कि किसी तरह इस बंदर को पकड़कर अपना भोजन बना लिया जाए. लेकिन गोलू हमेशा ऊँचे पेड़ पर रहता था, इसलिए मगरमच्छ कुछ नहीं कर पाता था. एक दिन मगरमच्छ ने एक नई योजना बनाई. वह मुस्कुराता हुआ पेड़ के नीचे पहुँचा और मीठी आवाज़ में बोला, मित्र गोलू! नदी के दूसरी ओर एक ऐसा बाग है, जहाँ तुम्हारे पेड़ से भी अधिक मीठे और स्वादिष्ट फल लगे हैं. यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर वहाँ ले चलूँ. '

गोलू सरल स्वभाव का था. उसे मगरमच्छ की बातों पर विश्वास हो गया. उसने सोचा कि नए फलों का स्वाद चखना अच्छा रहेगा. वह खुशी-खुशी मगरमच्छ की पीठ पर बैठ गया और दोनों नदी पार करने लगे. जब वे नदी के बीच पहुँचे, तब मगरमच्छ जोर से हँसा और बोला, 'अब तुम्हारा बचना मुश्किल है. मैं तुम्हें खाने के लिए ही यहाँ तक लाया हूँ. मेरी योजना सफल हो गई है. यह सुनते ही गोलू कुछ क्षण के लिए डर गया, लेकिन उसने अपना धैर्य नहीं खोया. उसने तुरंत सोचना शुरू किया कि इस संकट से कैसे निकला जाए. कुछ ही पल में उसके दिमाग में एक शानदार उपाय आया.

गोलू मुस्कुराते हुए बोला, 'अरे मित्र! यदि तुमने पहले ही अपनी बात बता दी होती, तो मैं अपना दिल साथ ले आता. मैं तो अपना दिल और सबसे स्वादिष्ट फल हमेशा पेड़ पर ही रखता हूँ. यदि तुम्हें मेरा दिल चाहिए, तो पहले मुझे वापस पेड़ तक ले चलो.

मगरमच्छ बहुत भोला था. उसने कभी सोचा ही नहीं कि कोई अपना दिल शरीर से अलग नहीं रख सकता. उसे गोलू की बात सच लगी. वह तुरंत मुड़ गया और गोलू को वापस उसी पेड़ की ओर ले आया. जैसे ही पेड़ पास आया, गोलू ने फुर्ती से एक लंबी छलांग लगाई और सीधे अपनी मजबूत डाल पर जा बैठा. अब वह पूरी तरह सुरक्षित था. पेड़ पर बैठकर गोलू हँसते हुए बोला, मित्र! क्या कोई अपना दिल शरीर से अलग रख सकता है? तुमने दोस्ती का नाटक करके मुझे धोखा देना चाहा, लेकिन बुद्धि और समझदारी के सामने तुम्हारी चालाकी टिक नहीं सकी.

मगरमच्छ शर्म से सिर झुका कर रह गया. उसे अपनी गलती का एहसास हुआ, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. उसने एक सच्चे दोस्त को खो दिया था. दूसरी ओर, गोलू ने अपनी सूझबूझ से न केवल अपनी जान बचाई, बल्कि यह भी साबित कर दिया कि संकट की घड़ी में शांत दिमाग और सही निर्णय सबसे बड़ा हथियार होते हैं.

सीख

यह कहानी हमें सिखाती है कि जीवन में चाहे कितनी भी बड़ी समस्या क्यों न आ जाए, यदि हम धैर्य बनाए रखें और अपनी बुद्धि का सही उपयोग करें, तो हर कठिनाई का समाधान निकाला जा सकता है. यही सच्ची चतुराई और सफलता की पहचान है.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें .

उत्तर:– 1. शेर मुस्कुरा रहा है, 2. नीचे की लाइन सफेद है, 3. हाथी की आँखें नीली हैं, 5. मगरमच्छ की पीठ पर हरा पत्ता, 6. जिराफ के सींगों के बीच एक अतिरिक्त धब्बा, 7. नदी के किनारे सफेद पत्थर, 8. बंदर का मुँह बंद है.

भूल भुलैया

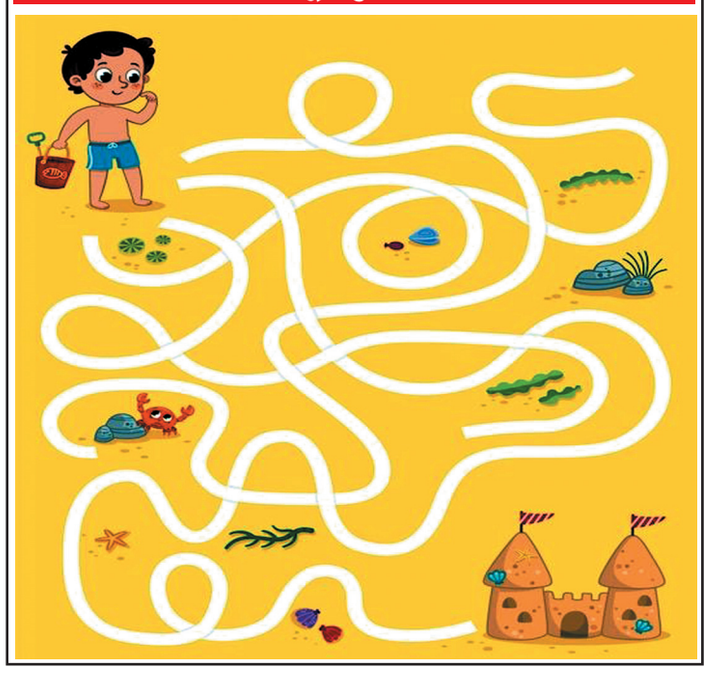

बूझो तो जानें

- ऐसी कौन-सी चीज़ है,
  जो जितनी सूखती है,
  उतनी ही गीली करती है
  उत्तर – तौलिया
- एक ऐसी चीज़,
  जिसके हाथ हैं, पैर नहीं;
  चलती रहती है, थकती नहीं
  उत्तर – घड़ी
- हरा पहनावा, लाल है घर,
  अंदर बैठा काला सफर
  उत्तर – तरबूज
- बिना पैरों के चलता हूँ,
  बिना पंखों के उड़ता हूँ
  जिसे छू लूँ, उसे हिला देता हूँ
  उत्तर – हवा
- दिनभर खड़ा रहता हूँ,
  रात को सो जाता हूँ
  धूप मिले तो साथ निभाऊँ
  उत्तर – परछाई
- एक घर में कई कमरे,
  सबके अलग-अलग दरवाज़े
  बिना चाबी खुल जाते हैं
  उत्तर – मधुमक्खी का छत्ता
- न आँख, न कान, न मुँह,
  फिर भी सारी दुनिया दिखा दूँ
  उत्तर – दर्पण (आईना)
- जितना निकालो उतना बढ़े,
  सबके घर में काम पड़े
  उत्तर – गड्ढा
- एक राजा की अनोखी रानी,
  सिर पर रखे पानी
  उत्तर – नारियल
- न हाथ हैं, न पैर हैं,
  फिर भी दौड़ लगाता हूँ
  हर घर में काम आता ह
  उत्तर – पंखा
- एक थाली में मोती भरे,
  सबके सिर पर औंधी धरे
  उत्तर – आकाश और तारे

जानकारी

फलों का राजा आम, स्वाद और सेहत का खजाना

भारत में आम का इतिहास हजारों वर्ष पुराना माना जाता है. प्राचीन ग्रंथों, लोककथाओं और साहित्य में आम का उल्लेख मिलता है. इसकी मिठास और सुगंध ने इसे सदियों से लोगों का प्रिय फल बनाए रखा है. यही वजह है कि आम को फलों का राजा भी कहा जाता है. भारत सरकार ने आम को राष्ट्रीय फल का दर्जा इसलिए दिया क्योंकि यह देश के लगभग हर राज्य में उगाया जाता है और भारतीय संस्कृति से गहराई से जुड़ा हुआ है.

उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, बिहार, पश्चिम बंगाल, गुजरात और मध्य प्रदेश जैसे कई राज्यों में इसकी बड़े पैमाने पर खेती होती है. क्या आप जानते हैं कि भारत में आम की एक हजार से अधिक किस्में पाई जाती हैं? हालांकि इनमें से कुछ ही किस्में व्यावसायिक रूप से लोकप्रिय हैं. अल्फांसो को उसकी मिठास और खुशबू के लिए, जबकि दशहरी और चौसा को उनके रसीले स्वाद के लिए सबसे अधिक पसंद किया जाता है. स्वाद के साथ-साथ आम स्वास्थ्य के लिए भी बेहद लाभदायक है. इसमें मौजूद विटामिन ए आंखों की रोशनी के लिए उपयोगी माना जाता है, जबकि विटामिन सी शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करता है. इसमें पाए जाने वाले फाइबर पाचन तंत्र को बेहतर बनाए रखने में सहायक होते हैं.

आम केवल खाने तक सीमित नहीं है. इससे अचार, जैम, जूस, शेक, आइसक्रीम, कैंडी, पना और कई तरह की मिठाइयां भी बनाई जाती हैं. कच्चे आम से बना आम पना गर्मियों में लू से बचाने वाला लोकप्रिय पेय माना जाता है. भारतीय परंपराओं में भी आम का विशेष महत्व है. शुभ अवसरों पर आम के पत्तों की बंदनवार घरों और मंदिरों के द्वार पर सजाई जाती है, जिसे सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है.

पेंगुइन उड़ नहीं सकते, फिर भी हैं कमाल के

पेंगुइन पृथ्वी के सबसे अनोखे पक्षियों में गिने जाते हैं. इनकी लगभग 18 प्रजातियाँ पाई जाती हैं और अधिकांश दक्षिणी गोलार्ध में रहती हैं. सबसे बड़ी प्रजाति एम्परर पेंगुइन होती है, जिसकी ऊँचाई लगभग 1.2 मीटर तक हो सकती है, जबकि सबसे छोटी लिटिल ब्लू पेंगुइन केवल 30 से 35 सेंटीमीटर लंबी होती है. हालांकि पेंगुइन के पंख होते हैं, लेकिन वे उड़ नहीं सकते. समय के साथ उनके पंख मजबूत फ्लिपर में बदल गए, जिनकी मदद से वे समुद्र में तेज़ी से तैरते हैं.

कुछ पेंगुइन पानी में 35 किलोमीटर प्रति घंटे तक की गति से तैर सकते हैं और कई मिनट तक पानी के भीतर रह सकते हैं. पेंगुइन की मोटी चर्बी और घने, जलरोधक पंख उन्हें जमा देने वाली ठंड से बचाते हैं. जब तेज़ बर्फीली हवाएँ चलती हैं, तो सैकड़ों पेंगुइन एक-दूसरे से सटकर खड़े हो जाते हैं. इस तरीके से वे शरीर की गर्मी साझा करते हैं और ठंड का सामना करते हैं. इनकी पारिवारिक जिंदगी भी बेहद दिलचस्प होती है. कई प्रजातियों में नर और मादा मिलकर अंडे की देखभाल करते हैं. एम्परर पेंगुइन का नर अपने पैरों पर अंडा रखकर उसे त्वचा की गर्म तह से ढकता है और कई सप्ताह तक उसकी रक्षा करता है, जबकि मादा भोजन की तलाश में समुद्र चली जाती है. पेंगुइन का भोजन मुख्य रूप से छोटी मछलियाँ, क्रिल और स्क्विड होते हैं. वे समुद्र में गोता लगाकर अपना भोजन पकड़ते हैं. उनकी आँखें पानी के भीतर भी साफ़ देखने में सक्षम होती हैं, जिससे शिकार करना आसान हो जाता है.

कविता

मेरी रंग-बिरंगी छतरी

रंग-बिरंगी मेरी छतरी,
बारिश में है सबसे प्यारी
टप-टप बूंदें जब हैं आती,
मुझे खुशी से खूब बचाती
हवा चले तो संग लहराए,
धूप में भी छाया बन जाए
छतरी मेरी प्यारी साथी,
हर मौसम में रहती साथ ही

हंसी-ठिठोली

- टीचर : बताओ, सबसे तेज़ क्या दौड़ता है?
  पप्पू : सर, छुट्टी की घंटी सुनते ही बच्चे
- मम्मी : पढ़ाई कर ली?
  बेटा : हाँ मम्मी, किताब खोलकर पढ़ाई को मौका दे दिया.
- टीचर : अगर मैं तुम्हें दो आम और दो आम दूँ, तो कितने आम होंगे
  छात्र : पाँच.
  टीचर : कैसे?
  छात्र : एक आम पहले से मेरे बैग में है.
- पापा : बड़े होकर क्या बनोगे?
  बेटा : मोबाइल चार्जर.
  पापा : क्यों?
  बेटा : सब मुझे ढूँढ़ते रहेंगे
- टीचर : बताओ, आलस किसे कहते हैं
  छात्र : सर, जो इसका जवाब भी न दे.
- मम्मी : इतनी देर से आईने में क्या देख रहे हो?
  बेटा : देख रहा हूँ कि मैं कितना स्मार्ट हूँ.
  मम्मी : अच्छा, पता चल गया?
  बेटा : नहीं, आईना धुंधला था.
- टीचर : होमवर्क क्यों नहीं किया?
  पप्पू : सर, बिजली चली गई थी.
  टीचर : लेकिन होमवर्क तो दिन में मिला था.
  पप्पू : सर, मैं रात में ही प्रेरित होता हूँ.
- दोस्त : तुम्हारा रिज़ल्ट कैसा आया?
  पप्पू : इतना अच्छा कि मम्मी ने कहा, अगली बार और मेहनत करना!

प्रेरक प्रसंग

निडर रानी लक्ष्मीबाई की वीरता की मिसाल

बहुत समय पहले झांसी राज्य में एक बहादुर रानी रहती थीं, जिनका नाम लक्ष्मीबाई था. बचपन में उनका नाम मणिकर्णिका था और सभी उन्हें प्यार से मनु कहते थे. मनु को खेल-कूद के साथ-साथ घुड़सवारी, तलवार चलाना और धनुष-बाण चलाना बहुत पसंद था. वे बचपन से ही निडर और आत्मविश्वासी थीं. समय बीतने के साथ उनका विवाह झांसी के राजा से हुआ और वे झांसी की रानी बनीं. कुछ वर्षों बाद राज्य पर कठिन समय आया. अंग्रेज झांसी पर अधिकार करना चाहते थे. उन्होंने कई तरह के दबाव बनाए, लेकिन रानी लक्ष्मीबाई ने अपने राज्य और अपने लोगों की रक्षा करने का दृढ़ संकल्प लिया.

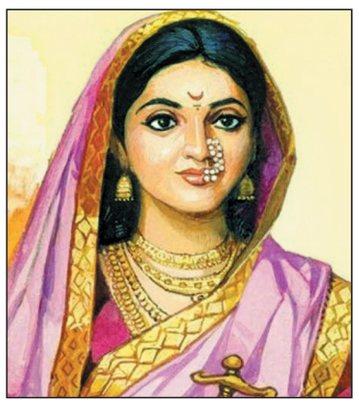

रानी ने अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाया और स्वयं युद्ध की तैयारी में जुट गईं. उन्होंने अपने घोड़े पर सवार होकर अद्भुत साहस के साथ युद्ध का नेतृत्व किया. वे कभी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटीं. उनके चेहरे पर आत्मविश्वास और दिल में अपने देश के प्रति अटूट प्रेम था. युद्ध कठिन था, लेकिन रानी ने हार नहीं मानी. उन्होंने अपने सैनिकों को हमेशा यही संदेश दिया कि अपने देश, अपने सम्मान और अपने कर्तव्य की रक्षा करना सबसे बड़ा धर्म है. उनकी वीरता देखकर मित्र और शत्रु दोनों उनकी बहादुरी की प्रशंसा करते थे.

रानी लक्ष्मीबाई का जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्चा वीर वही होता है जो कठिन परिस्थितियों में भी साहस और धैर्य बनाए रखे. उन्होंने अपने साहस, नेतृत्व और देशभक्ति से इतिहास में अमर स्थान प्राप्त किया. आज भी उनका नाम सुनते ही हर भारतीय का सिर गर्व से ऊँचा हो जाता है.

बच्चों के लिए रानी लक्ष्मीबाई की कहानी यह संदेश देती है कि जीवन में ईमानदारी, आत्मविश्वास, अनुशासन और मेहनत के साथ आगे बढ़ने वाला व्यक्ति हर चुनौती का सामना कर सकता है. यदि हम अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहें और कभी हार न मानें, तो सफलता अवश्य मिलती है. साहस, आत्मविश्वास, देशप्रेम और दृढ़ निश्चय से हर कठिन चुनौती का सामना किया जा सकता है. जो व्यक्ति अपने कर्तव्य और सच्चाई के मार्ग पर चलता है, वही जीवन में सच्चा विजेता बनता है.

बिंदु मिलाओ

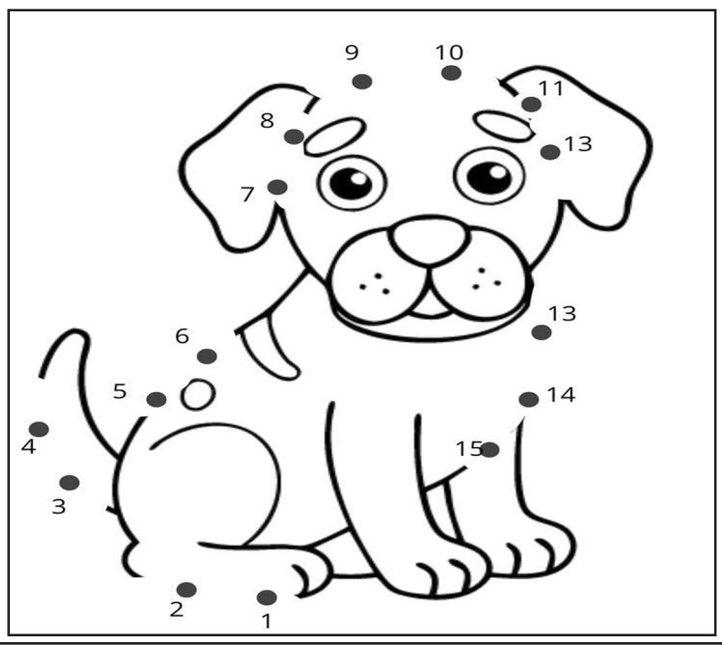

रंग भरो

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com पर मेल करें .